International Journal of Applied Research 2015; 1(7): 187-188

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(7): 187-188
www.allresearchjournal.com
Received: 11-04-2015
Accepted: 14-05-2015

डॉ0 शिवदत्त शर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ढलियारा कांगड़ा हिमाचल प्रदेश ।

Correspondence:
डॉ0 शिवदत्त शर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ढलियारा कांगड़ा हिमाचल प्रदेश ।

समन्वय वादी सन्त –गोस्बामी तुलसीदास

डॉ0 शिवदत्त शर्मा

भारत भूमि रत्नों की खान है । समय समय पर अनेक सन्त , महात्मा दार्शनिक एवं समाज सुधारक इस भूमि पर उत्पन्न हुए ,शायद इसलिए भी इसे वसुन्धरा कहा जाता है । भक्ति काल वास्तव में इसलिए भी स्वर्ण युग है क्योंकि हिन्दी के इतिहास में कई परिवर्तन हमें देखने को मिलते ही हैं साथ ही इस काल में अनेक समाज सुधारक एवं मनीषी भी अवतरित हुए जिन्होंने भारत देश के परास्त मन को पुनः जीवन्तता प्रदान करवाने का स्तुत्य प्रयास किया । कबीर रविदास सूर के अतिरिक्त जिसे सर्वाधिक लोकप्रियता मिली वे हैं सन्त तुलसी दास । रामचरित मानस जैसे अद्वितीय महाकाव्य की रचना करके वे अमर हो गए है । महाकाव्य का ताना – बाना देखकर ऐसा लगता है उन्होंने न केवल वाल्मीकि को ही आत्मसात किया अपितु समकालीन समाज की अपेक्षाओं और चुनौतियों को भी दृष्टि से ओझल नहीं होने दिया । टूटते सामाजिक मूल्यों को किस प्रकार पिरोया जाता है , राम चरित मानस का अध्ययन कर व्यक्ति जान सकता है , चाहे वह किसी भी धर्म का अनुयायी क्यों न हो । उन्होंने अपने अक्षुण्ण ज्ञान के प्रकाश में प्रायः सम्पूर्ण समाज को आभा युक्त कर दिया है । कहा है–

सुर सूर तुलसी शशी उडुगुण केशव दास ।
आज कल के कवि, जहं तहं करत प्रकाश ।।

तुलसी विराट व्यक्तित्व के मालिक है , उनका महाकाव्य भी विराटता को लेकर संजोया गया है । जो कुछ मानस में है , वही कुछ समाज में है , जो उसमें नहीं वह कहीं भी संम्भव नहीं हो सकता । आदर्श पिता , पुत्र, माता , भाई – मित्र पत्नी , शत्रु सब राम चरित मानस के आदर्श पात्र हैं । मनुस्मृति में भी कहा गया है कि –

एतद् देश प्रसूतस्य सकाशात् अग्र जन्मन : ।
स्वं स्वं चरितं शिक्षेरन , पृथिव्यां सर्व मानवा : ।।

राम चरित मानस का समाज इसी भावना का गवाह है ।
तुलसी असाधारण काव्यकार हैं । उन्होंने जब भी कोई चौपाई दोहा रचने का उपक्रम किया , आदर्श उनके समक्ष रहा है । वे हर तरह से अपनी भावना और समाज की अपेक्षा में समन्वय बना कर चलते है । समन्वय वाद भारतीय संस्कृति की एक महत्व पूर्ण विशेषता है । युग द्रष्टा तुलसी ने जनता के ह्रदय की धड़कन को पहचाना और राम चरित मानस के रूप में समन्वय सिद्धान्त का व्यवस्थित निरुपण और कार्यान्वयन बड़े गहरे अनुभव के बाद संम्भव हो पाता है । उनकी रचना को देखकर प्रायः झलकता है कि उनके व्यक्तित्व में कवि की **सृजनात्मक प्रतिभा , भक्ति का निषकाम ह्रदय** तथा **समाज सुधार की मंगल भावना** का अद्भुत समन्वय था । डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी समन्वयक की परिभाषा देते हुए कहा है कि लोक नायक वही हो सकता है , जो समन्वय कर सके , क्योंकि भारतीय जनता में नाना प्रकार की परम्परा विरोधी संस्कृतियां साधनाएं जातियां आचार निष्ठा और विचार पद्धतियां प्रचलित है । इस तरह महात्मा बुद्व एवं गीता के उपदेश एवं तुलसी की विचार धारा समन्बय से ओत प्रोत है ।
महात्मा बुद्ध से बढ़ कर तुलसी का प्रयास अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि तुलसी ने समकालीन समाज में परिव्याप्त नाना प्रकार के धार्मिक , पारिवारिक , आध्यामिक और सामाजिक , राजनैतिक आदि वैषम्यों को मिटाकर उनके मध्य की खाई को पाटने , अर्थात् उनमें समन्वय करने का प्रयास किया है। साहित्यिक क्षेत्र में भी उनका समन्वय श्लाध्य है । तुलसी से समकालीन जीवन में फैली घोर अशान्ति , अनाचार , पापाचार , अधार्मिकता और विषमता को मिटाने का भरसक प्रयास किया – तुलसी की समन्बय वादिता की विशेषता विभिन्न क्षेत्रों में देखी जा सकती है –

सामाजिक क्षेत्र में समन्बय :– तुलसी कालीन समाज बुरी तरह संत्रस्त एवं दुखी था । जाति – पाति ऊँच – नीच ने समाज की संघटना को ही तोड़ दिया था । समाज के इस विकृत रूप को ठीक करने के लिए एवं परस्पर सौहार्द्र एवं प्रेम की भावना का विकास करने के लिए तुलसी ने अपने महाकाव्य में भगवान राम को निषाद मल्लाह को मित्र घोषित किया । शर्वरी के जुठे बेर राम को खिलाए । तुच्छ वानर , भालू व विभीषण से प्रेम पूर्वक भेटं करवाई । यही नहीं मानस में गुरु विशिष्ट को निषाद से मिलाया । ये सभी प्रसंग अनायास नहीं , अपितु सायास मानस में रखे गए है , जिनसे प्रेरणा पा कर मानव – मानव के प्रति ऊँच–नीच का भाव समाप्त हो तथा प्रेम का संचार हो सके । इस दृष्टि से तुलसी का यह समन्वय वादी प्रयास समाज को एकता के सूत्र में पिरोने में सफल रहा ।

धार्मिक क्षेत्र में समन्बय :– धर्म मानव जीवन की एक अमूल्य निधि है । तुलसी कालीन समाज में धर्म की स्थिति बड़ी अस्त व्यस्त थी 1– धर्म एक व्यापार बन चुका था , पापाचार सर्वाधिक धर्म की आड़ में हो रहा था । ऐसी अवस्था मे यह परम आवश्यक था कि किसी धार्मिक शुद्ध भावना की स्थापना होती जिस से ऊहा पोह में फसी निरीह जनता का उद्धार हो सके । इसी शोचनीय अवस्था को देखकर तुलसी ने मोर्चा सम्भाला और मानस के माध्यम से धर्म का सच्चा और मौलिक अर्थ जनता को समझाया । धर्म के नाम पर बने विभिन्न सम्प्रदाय जैसे शिव, वैष्णव , शाक्त आदि परस्पर वैमनस्य और भेद भाव की अग्नि में जलते रहते थे । सन्त तुलसी दास ने सभी धर्मों , सम्प्रदायों में समन्वय स्थापित कर , प्रत्येक की बुराई को दूर करने का प्रयास किया ।

सगुण – निगुण में समन्वय – वास्तव में मध्यकाल में निगुण सगुण का भेद बहुत मुखर था । जो कार्य कबीर कर चुके थे उसी को तुलसी दास ने भी आगे वढ़ाया फर्क इतना था कि कबीर ने निगुण का पक्ष लिया जब की तुलसी ने दोनों में सांमजस्य स्थापित किया । उन्होंने स्पष्ट किया है कि ईश्वर तक पहुँचने के दोनों रास्ते अपनी अपनी जगह महत्वपूर्ण है , उन्होंने दोनों मार्गो सगुण एवं निर्गुण का समन्वय करके जनता में सौहार्द्र का संचार किया ।

सगुणहिं निगुणहिं कछु नहीं भेदा 2 , अर्थात दोनों में कोई भेद नहीं है ।

शैव एवं वैष्णवों में समन्वय – तुलसी दास के समकालीन साहित्य में शैवों और वैष्णवों में परस्पर मत भेद के प्रमाण मिलते हैं । तुलसी दास ने दोनों समूहों में समन्बय स्थापित किया । राम चरित मानस में स्थान स्थान पर इसके प्रमाण मिलते हैं । तुलसी ने शिव को राम का और राम को शिव का उपासक घोषित कर शैवों और वैष्णवों में समरसता उत्पन्न करने का प्रयास किया ।

संकर प्रिय मम द्रोही , शिव द्रोही मम दास । 3
ते नर करहिं कलप भरि , घोर नरक महुं वास ।।

इसी तरह शिव से भी राम की महिमा गान करवा कर सामांजस्य एवं समरसता बढ़ाने का प्रयास किया गया है ।

इसी तरह – सोइ मम इष्ट देव रघुवीरा । सेवत जाहि सदा मुनि धीरा

जाके प्रिय न राम वैदेही
तजिये ताहि कोटि वैरी सम , जदपि परम सनेही ।

ज्ञान और कर्म तथा भक्ति में समन्वय – सन्त तुलसी ने स्पष्ट कहा कि ज्ञान भक्ति और कर्म तीनों का ही समन्वय मनुष्य को सफल बना सकता है । तीनो का अन्तरंग सम्बन्ध हैं ।

ज्ञानहिं भक्तिहिं कछु नहीं भेदा , उभय हरहिं भव संम्भव खेदा। 4

दार्शनिक विचारो में समन्वय :– तुलसी दास दार्शनिक विभेदों से परिचत थे , यहीं कारण है

द्वैत अद्वैत , विशिटाद्वैत वाद विशेषतः दार्शनिक विचार धाराएं समाज को भ्रमित कर अपने पक्ष को श्रेष्ठ प्रमाणित करने में लगी थी , उन्होंने किसी एक दर्शन का विशेष समर्थन नहीं किया अपितु सभी में समन्वय स्थापित कर सामाजिक तौर पर विशेष योगदान दिया ।

कोऊ कह सत्य झूठ कह कोऊ , जुगल प्रबल किर माने ।
तुलसी दास परिहरे तीनि प्रेम सो आपन पहिचाने ।

नर एवं नारायण में समन्वय – तुलसी ने अपने आराध्य राम को नारायण के साथ साथ नर अर्थात मानव और व्रहम के रूप में चित्रित किया है । इस तरह नर ओर नारायण में समन्वय स्थापित कर नर और नारायणत्व को मानव के अत्यल्त निकट ला का स्थापित कर दिया ।

बिनु पद चलै सुनै बिनु काना । कर बिनु करम करै विधि नाना ।। 5

भाग्य एवं पुरुषार्थ में समन्वय :– भाग्यवाद पुरुषार्थ में तुलसी ने समन्वय स्थापित कर कर्म को महिमा मण्डित कर दिया । उन्होंने स्पष्ट घोषणा की है कि–

करम प्रधान विश्व करी राखा , जो जस करइ सो तस फलु चाखा ।।

सांस्कृतिक समन्वय :– राम चरित मानस में देव , नर , वानर , राजा , साधारण मनुष्य इस सभी को एक ही छत्र के नीचे खड़ा कर यह संकेत दिया है कि सभी का अपनी अपनी जगह महत्व है और सभी का योगदान महत्वपूर्ण होता है । यहां तक हिन्दू संस्कृति के साथ मुस्लिम संस्कृति का भी समन्वय उन्होंने स्थापित कर समाज को एक जुट करने का उपक्रम किया ।

राम और कृष्ण काव्य धारा में समन्वय :– संत तुलसी स्वभावतः राम भक्त मांने जाते हैं परन्तु उन्होंने कृष्ण जी के चरित्र को लेकर कृष्ण गीता वली की रचना करके दोनों सम्प्रदायों में ऐक्य स्थापित किया तथा दोनों में मूलतः एक होने का प्रमाण दिया ।

इसी तरह भाषा अलंकार ; छन्द विधान एवं शैली में भी समन्वय स्थापित कर एक महान समन्वय वादी कवि , भक्त के रूप में स्थापित किया । सम्पूर्ण विश्व उनके इस महान समन्वय वादी दृष्टि कोण को नमन करता है ।

सदर्भ सूची

1. श्री राम चरित मानस – बाल काण्ड 183 (1)
2. श्री राम चरित मानस – बाल काण्ड 115 (1)
3. श्री राम चरित मानस – लंका काण्ड (2)
4. श्री राम चरित मानस – उत्तर काण्ड 114 (6)
5. श्री राम चरित मानस – बाल काण्ड 183 (1)